International Journal of Jyotish Research: 2018; 3(2): 32-34

International Journal of Jyotish Research
(वेदचक्षु)

ISSN: 2456-4427
Impact Factor: RJIF: 5.11
Jyotish 2018; 3(2): 32-34
© 2018 Jyotish
www.jyotishajournal.com
Received: 26-05-2018
Accepted: 30-06-2018

अनुज कुमार शुक्ल
शोध छात्र–ज्योतिर्विज्ञान विभाग,
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ,
उत्तर प्रदेश, भारत।

Correspondence
अनुज कुमार शुक्ल
शोध छात्र–ज्योतिर्विज्ञान विभाग,
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ,
उत्तर प्रदेश, भारत।

विवाहकाल निरूपण

अनुज कुमार शुक्ल

सारांश
भारतीय वैदिक सनातन परम्परानुसार संस्कारों में विद्याध्ययन के पश्चात् प्रमुख रूप से 'विवाह' संस्कार आता है, जिसे 'पाणिग्रहण संस्कार' भी कहते हैं। गृहस्थ आश्रम में प्रवेश का मार्ग इसी संस्कार से आरम्भ होता है। माता–पिता के पश्चात व्यक्ति का निकटतम सम्बन्ध पत्नी के साथ रहता है। इस सम्बन्ध का प्रभाव केवल मनुष्यों के जीवन तक नहीं अपितु उसके वंश की आगामी कई पीढ़ियों तक चलता है, क्योंकि सन्तान परम्परा में पूर्वजों के गुण–दोष किसी न किसी रूप में विद्यमान रहते हैं।
समावर्तन सस्कार के अनन्तर पुरूष के विवाह के लिए अवश्य प्रयत्न करना चाहिए। वैदिक नित्यकर्म, बिना पत्नी के नहीं हो सकते। अतः जीवन का साथी, पुरूष की सहचारिणी स्त्री एवं स्त्री का सहचारी पुरूष दोनों स्त्री पुरूषों के सम्मिश्रण ऐहिक और परलौकिक (अदृष्ट) अभ्युदय के लिए गृहस्थ आश्रम सर्वश्रेष्ठ आश्रम है। गृहस्थाश्रम से ही ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ और संन्यास जैसे उच्च आश्रमों को प्रश्रय मिलता है। पति के अनुकूल शील स्वभाव से युक्त भार्या धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की कारण होती है। समस्त संस्कारों में 'विवाह संस्कार' का महत्वपूर्ण स्थान है, अधिकांश गृह्यसूत्रों का आरम्भ विवाह संस्कार से होता है। ऋग्वेद तथा अथर्ववेद में वैवाहिक विधि–विधानों की काव्यात्मक अभिव्यक्ति मिलती है, उपनिषदों के युग में आश्रम चतुष्टय का सिद्धान्त पूरी तरह से प्रतिष्ठित हो चुका था, जिनमें गृहस्थाश्रम को सर्वाधिक महत्व दिया गया था। आज भी गृहस्थाश्रम का महत्व उसी प्रकार है। गृहस्थाश्रम की आधारशिला 'विवाह संस्कार' ही है, क्योंकि इसी संस्कार के अवसर पर वर–वधू अपने नवीन जीवन के महान उत्तरदायित्व का निर्वहन करने की प्रतिज्ञा करते है।

कूट शब्द – विवाह, काल, त्रिवर्गकरणं, जनमानस, अर्धेन्द्र, पित्रऋण।

प्रस्तावना
विवाह किस आयु में होगा? यह प्रश्न गम्भीर चुनौती के रूप में भारतीय जनमानस को आन्दोलित करता रहा है। ज्योतिषशास्त्र के मनीषी आचार्यो ने प्राचीनकाल में ही इस प्रश्न का भली भाँति विचार किया था।

''भार्यात्रिवर्गकरणं शुभशीलयुक्ता''[1]

पति के अनुकुल शील स्वभाव अर्थात अच्छे गुणों से युक्त भार्या धर्म, अर्थ, काम की कारण होती है।

यथोक्तम्–

ब्रह्मद्युद्वाहसम्भूतः पितृणां तारकः सुतः।
विवाहस्य फलं त्वेतत् व्याख्यात् परमर्षिभिः।।[2]

अर्थात केवल ब्रह्म आदि पवित्र विवाह सम्बन्धों से उत्पन्न पुत्र ही पितृगणों की आत्मा को मुक्ति प्रदान करा सकता है, क्योंकि वही पितृ ऋण के लिए तर्पण का अधिकारी होता है। विवाह संस्कार का प्रथम उल्लेख ऋग्वेद में सूर्य और सोम के विवाह के रूप में मिलता है। विवाह के बिना सूर्य वर्षा नहीं कर पाते थे तथा पृथ्वी अन्न नहीं उपजा सकते थे। पॉचों प्रकार की प्रजाओं के {स्थावर, उद्भिज, अण्डज, पिण्डज, स्वेदज} हाहाकार करने पर विवाह हुआ।

यथोक्तम्–

तौ संयन्तौ एतंदेव विवाह व्यवहेताम्।।[3]

इस प्रकार दोनों की शक्तियों सम्मिलन हो गया।
विवाह शब्द की निरूक्ति वेद की व्याख्या करने वाले सायणाचार्य जी ने कुछ इन शब्दों में की है।

यथोक्तम्–

''तदिदं विपर्यासेन सम्बन्ध नयनं विवाहम''[4]

विश्वकल्याण के लिए दो परस्पर विरूद्ध स्वभाव की मौलिक शक्तियों का सम्बन्ध होना विवाह है।

''अपत्नीको नरो भूप कर्मयोभ्यो न जायेते ब्राह्मणः।
क्षत्रियो वापि वैश्य शूद्रोपि वा नरैः।।[5]

कोई भी व्यक्ति यदि उसकी पत्नी नहीं है चाहें वह ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य अथवा शूद्र कोई भी हो धार्मिक क्रियाओं का अधिकारी नहीं होता। अतः बिना विवाह के दैव और पितृ ऋणों को नहीं चुकाया जा सकता।
शत्पथ ब्राह्मण ग्रंथ में याज्ञवल्क्य का मत है कि विवाह संस्कार के बिना मानव अर्धेन्द्र अर्थात अपूर्ण है।
अतएव भारतीय समाज में विवाह को एक बहुत बड़ा समाजिक दायित्व माना गया है। लड़का हो या लड़की माता–पिता को उनके युवा होते ही विवाह ही चिन्ता सताने लगती है। यही कारण है कि प्रायः सभी ज्योतिषयों के सामने विवाह से सम्बन्धित प्रश्न निरन्तर पूछे जाते है। हमारे ऋषियों और ज्योतिर्विदों ने विवाह के समय निर्धारण हेतु बहुत से नियमों का प्रतिपादन किया है।

यथोक्तम्–

दारेशे शुभराशिस्थे स्वोच्चस्वर्क्षगतो भृगुः।
पंचमे नवमेऽब्दे तु विवाहः प्रायशो भवेत।।[6]

यदि सप्तमेश शुभ ग्रह की राशि में हो और शुक्र उच्च या स्वराशि में हो तो पॉचवें या नवें वर्ष में प्रायः विवाह हो जाता है।

''दारस्थानं गते सूर्ये तदीशे भृगुसंयुते।
सप्तमैकादशे वर्षे विवाहः प्रायशो भवेत।।[7]

यदि सप्तम स्थान में सूर्य हो तथा सप्तमेश शुक्र के साथ हो तो सातवें या ग्यारहवें वर्ष के निकट विवाह होता है।

''कुटुम्ब स्थानगे सूर्ये दारेशे लाभराशिगे।
दशमे षोडशाब्दे च विवाहः प्रायशो भवेत्।।[8]

शुक्र यदि द्वितीय स्थान में व सप्तमेश एकादश स्थान में हो तो दस या सोलह वर्ष में विवाह होता है।

''लग्नकेन्द्रगते शुक्रे लग्नेशे मन्दराशिगे।[9]
वर्षेकादशे प्राप्ते विवाहं लभते नरः।।

शुक्र केन्द्र में हो तथा लग्नेश मकर या कुम्भ राशि में हो तो 11 वर्ष की आयु में विवाह होता है।

''लग्नात्केन्द्रगते शुक्रे तस्मात्काम गते शनौ।
द्वादशैकोनविंशे च विवाहः प्रायशो भवेत्।।[10]

लग्न से केन्द्र में शुक्र हो, शुक्र से सप्तम में शनि हो तो 12 या 19 वर्ष में विवाह होता है।

''चन्द्राज्जामित्रगे शुक्रे शुक्राज्जामित्रगेशनौ।
वत्सरेष्टादशे प्राप्ते विवाहं लभते नरः।।[11]

चन्द्र कुण्डली में चन्द्र व शनि साथ–साथ हो और इससे सप्तम में शुक्र हो तो 18 वर्ष में विवाह होता है।

धनेशे लाभराशिस्थे लग्नेशे कर्मराशिगे।
अब्दे पंचदशे प्राप्ते विवाहं लभते नरः।।[12]

द्वितीयेश एकादश में गया हो, लग्नेश दशम स्थान में हो तो 15 वर्ष में विवाह होता है।

''धनेशे लाभराशिस्थे लाभेशे धनराशिगे।
अब्दे त्रयोदशे प्राप्ते विवाहं लभते नरः।।[13]

यदि धनेश लाभ में हो व लाभेश धन भाव में हो तो 13 वर्ष में विवाह होता है।

''रन्ध्राज्जामित्रगे शुक्रे तदीशे भौमसंयुते।
द्वाविंशे सप्तविंशेब्दे विवाहं लभते नरः।।[14]

यदि शुक्र द्वितीय स्थान में हो और द्वितीयेश मंगल के साथ हो तो विवाह 22 या 27 वर्ष में होता है।

''दारांशकगते लग्ननाथे दारेश्वरे व्यये।
त्रयोविंशे च षड्विंशे विवाहं लभते नरः।।[15]

लग्नेश यदि सप्तमेश के नवांश में हो एंव सप्तमेश व्यय भाव में हो तो 23 या 26 वर्ष में विवाह होता है।

''रन्ध्रेशे दारराशिस्थे लग्नांशभृगुसंयुते।
पंचविंशे त्रयस्त्रिंशे विवाहं लभते नरः।।[16]

यदि अष्टमेश सप्तम भाव में स्थित हो तथा शुक्र लग्न नावंश राशि में हो तो 23 या 25 वर्ष में विवाह होता है।

''भाग्याद भाग्यगते शुक्रे तद्द्वये राहु संयुते।
एकत्रिंशात्त्रयस्त्रिंशे दारालाभं विनिर्दिशेत।।[17]

यदि पंचम भाव में शुक्र हो तथा राहु पॉचवें या नवें भाव में हो तो 31 से 33 वर्ष के मध्य विवाह होता है।

''भाग्याज्जामित्रगे शुक्रे तद्द्यूने दारनायके।
त्रिंशे वा सप्तविंशाब्दे विवाहं लभते नरः।।[18]

भाग्य से सप्तम अर्थात तृतीय भाव में शुक्र हो तथा नवम भाव में सप्तमेश हो तो 27 या 30 वर्ष में विवाह होता है।

विवाह समय के कतिपय अन्य सूत्र

''शुक्रोस्तपो वा तनुनाथभांश।
त्रकोणमायाति तदा विवाह।।[19]

लग्नेश जिस राशि या नावंश में हो उससे त्रिकोण राशि में जब गोचरवश शुक्र व सप्तमेश आता है, तब विवाह सम्पन्न होता है।

''कलत्रसंस्थस्य कलत्रदृष्टेर्दशागमेवाथ कलत्रपस्य।
यदा विलग्नाधिपतिः प्रयाति कलत्रभं तत्र कलत्रलाभः।।[20]

जो ग्रह लग्न से सप्तम भाव में हो, जो ग्रह सप्तम भाव को देखता हो और सप्तमेश इन तीनों ग्रहों की जब दशा, अन्तर्दशायें आती है तब विवाह के योग बनते है।

कलत्रनाथस्थितभांशकेशयोः सितक्षपानायकयोर्बलीयसः।
दशागमे द्यूनूपयुक्तशांशक त्रिकोणगे देवगुरौ करग्रहः।।[21]

जिस राशि में सप्तमेश हो उस राशि का स्वामी तथा जिस नवांश में सप्तमेश हो उसका स्वामी इन दोनों में तथा शुक्र और चन्द्र में से जो बलवान हो उस ग्रह की दशा में तथा सप्तमेश जिस राशि या नवांश में हो उससे त्रिकोण राशि में जब गोचरवश गुरू आये तब विवाह का योग होता है।

''रोअस्मिन् स्यात्समये विवाहघटनां राहोश्च केचिज्जगुः।[22]

कुछ लोगों का मत है कि राहु की दशा व अर्न्तदशा में विवाह होता है।

''लग्नानंगपतिस्फुटैक्यग्रहगे जीवे विवाहं वदे
च्चन्द्राधिष्ठिततारकावधुपयोरक्यांशके व तथा।।[23]

लग्न के स्वामी के राशि अंश कला–विकला और सप्तम भाव के स्वामी के राशि अंश कला–विकलाओं के योग तुल्य राशि में जब गोचर से गुरू आये तब विवाह होता है।
अथवा चन्द्रमा जिस राशि में है उस चन्द्र के स्पष्ट राशि, अंश, कला–विकला और सप्तम भाव स्वामी के राशि अंश कला–विकला के योग तुल्य राशि अंश में जब गोचर से गुरू आता है तब विवाह होता है।

''शुक्रोपेतकलत्रराशिप दशाभुक्तिर्विवाह प्रदा।
लग्नाद्वित्तपतिस्थराशिप दशाभुक्तौ च पाणिग्रहः।।
कर्मायुर्भवनाधिनायक दशाभुक्तौ विवाहः क्रमात
कामेशेन युतः कलत्रग्रहगस्तत्पाक भुक्तौ तु वा।।[24]

शुक्र युत सप्तमेश की दशा या अन्तर्दशा में विवाह होता है, लग्न से द्वितीय भाव के स्वामी की दशा–अन्तर्दशा में, दशमेश की दशा–अन्तर्दशा में, अष्टमेश की दशा–अन्तर्दशा में, सप्तमेश से युक्त तथा सप्तम स्थान में स्थित ग्रह की दशा–अन्तर्दशा में विवाह होता है।

संदर्भ

1. मुहूर्तचिन्तामणि – विवाहप्रकरण श्लोक 1
2. स्मृति संग्रह
3. ऋग्वेद
4. निरूक्त
5. याज्ञवल्क्य स्मृति
6. वृहत्पाराशरहोराशास्त्र – जायाभावफलाध्यायः, श्लोक संख्या – 22
7. वृहत्पराशरहोराशास्त्र – जायाभावफलाध्यायः, श्लोक संख्या– 23,24,25,26,27,28,29,30,31
8. वृहत्पराशरहोराशास्त्र – जायाभावफलाध्यायः, श्लोक संख्या– 32,33,34
9. फलदीपिका – दशम अध्याय, श्लोक संख्या – 12
10. फलदीपिका – दशम अध्याय, श्लोक संख्या – 13
11. फलदीपिका – दशम अध्यय, श्लोक संख्या – 14
12. भार्या विचार प्रकरण जातकादेशमार्ग, श्लोक 30
13. जातकपारिजात – सप्तमअष्टमनवमभावफलाध्यायः, श्लोक संख्या – 27
14. जातकपारिजात – सप्तमअष्टमनवमभावफलाध्यायः, श्लोक संख्या – 29